भारतीय
लेखकों
के चित्रों का
एलबम

चित्रकार
हमदम

घरेलू लाइब्रेरी योजना (बुक क्लब)

जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

# भारतीय लेखकों के चित्रों का
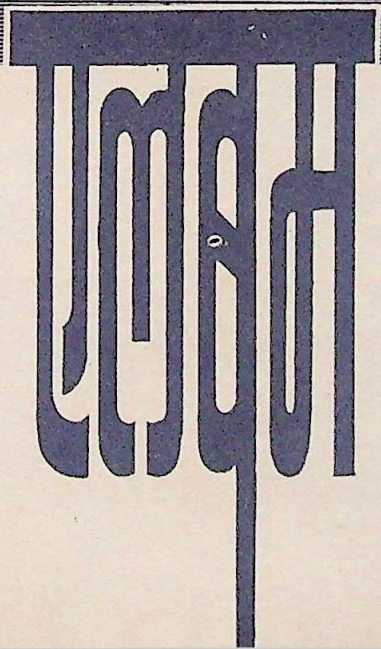
# भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र खड़ी बोली हिन्दी के निर्माता और साहित्य में नवयुग के प्रवर्तक थे। आपका जन्म १८५० में हुआ और आप केवल ३५ वर्ष जीवित रहे। इतने कम समय में ही आपने न केवल भाषा को रूप दिया अपितु २०० के लगभग रचनाएं लिखकर साहित्य को पुष्ट किया।

आपने नाटक, कविता, निबंध और उपन्यास सभी कुछ लिखा है। नाटकों में प्रसिद्ध हैं 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी', 'सत्य हरिश्चन्द्र' तथा 'चन्द्रावली' और कविताओं में 'प्रबोधिनी' 'प्रेम माधुरी', 'वर्षा विनोद' इत्यादि।

# प्रेमचन्द

प्रेमचन्द खड़ी बोली हिन्दी के सर्वप्रथम परिपूर्ण उपन्यासकार तथा हिन्दी कथा-साहित्य की पूर्णता के प्रतीक हैं। उनकी कृतियों में देशभक्ति तथा समाज-सुधार की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।

प्रेमचन्द जी का जीवन अत्यन्त कष्टों में बीता। पहले आप उर्दू में लिखते थे, फिर हिन्दी में लिखने लगे। आपकी कृतियों में गांवों और वहां के निवासी किसानों के जीवन का बहुत भावपूर्ण चित्रण मिलता है।

आपने सैकड़ों कहानियां तथा बहुत-से उपन्यास लिखे हैं। उनमें कुछ प्रमुख ये हैं: 'सेवासदन', 'ग़बन', 'रंगभूमि', प्रेमाश्रम', 'गोदान' इत्यादि।

आपने 'हंस' नामक मासिक का भी सम्पादन किया। कुछ दिन आप फिल्मों की दुनिया बम्बई में भी रहे पर वहां के रंग-ढंग से परेशान होकर लौट आए। आपके देहान्त के पश्चात् आपके कई उपन्यासों पर फिल्में बनी हैं।
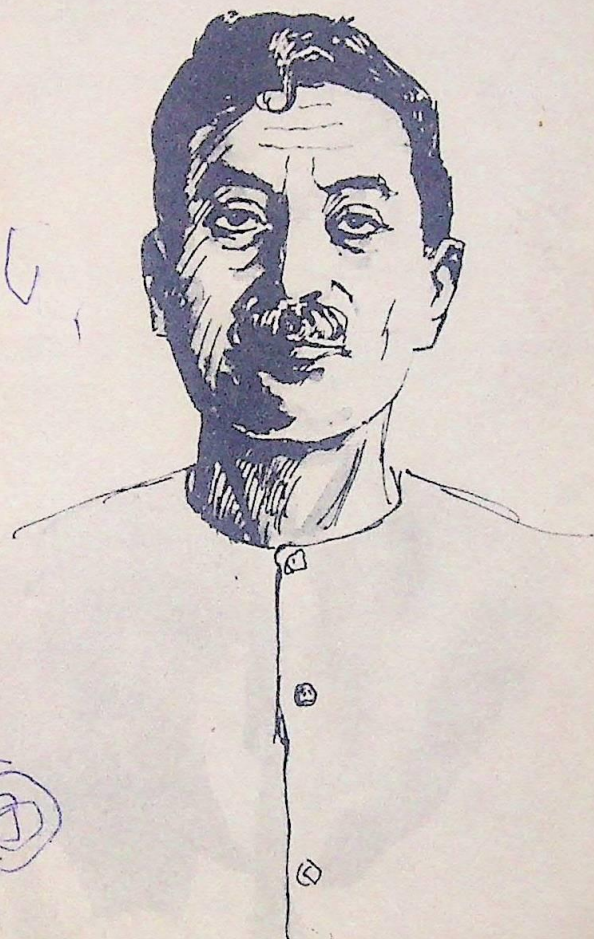
# डॉ० राधाकृष्णन्

भारतीय गणराज्य के भू० राष्ट्रपति डॉ० राधा-कृष्णन् की गणना विश्व के प्रमुख दार्शनिकों में की जाती है। आपका जन्म १८८८ में मद्रास के तिरु-तरि नामक स्थान में हुआ था। मद्रास विश्वविद्या-लय में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में दर्शन के प्रोफेसर तथा अन्त में हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। इसके साथ ही आप ऑक्सफोर्ड तथा शिकागो विश्वविद्या-लयों में भी भारतीय दर्शन के प्रवक्ता रहे। फिर आप रूस में भारत के राजदूत रहे और इसके बाद उपराष्ट्रपति चुने गए। अब आप राष्ट्रपति हैं।

आप अनेक संस्थाओं से संबद्ध रहे हैं। आपने दार्शनिक विषयों पर २० से अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें प्रमुख हैं 'इंडियन फिलॉसफी' (दो भाग), 'दि हिन्दू व्यू ऑव लाइफ', 'एन आइडियलिस्ट व्यू ऑव लाइफ', 'ईस्टर्न रिलीजन्स एण्ड वेस्टर्न थॉट', 'रिकवरी ऑव फेथ' इत्यादि। इसके अतिरिक्त आपने 'भगवद्गीता', 'उपनिषद्' तथा 'ब्रह्मसूत्र' का भी अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है।

आपकी षष्ट्यब्दि-पूर्ति पर संसार के प्रमुख विचारकों ने एक अभिनंदन-ग्रन्थ भेंट किया।
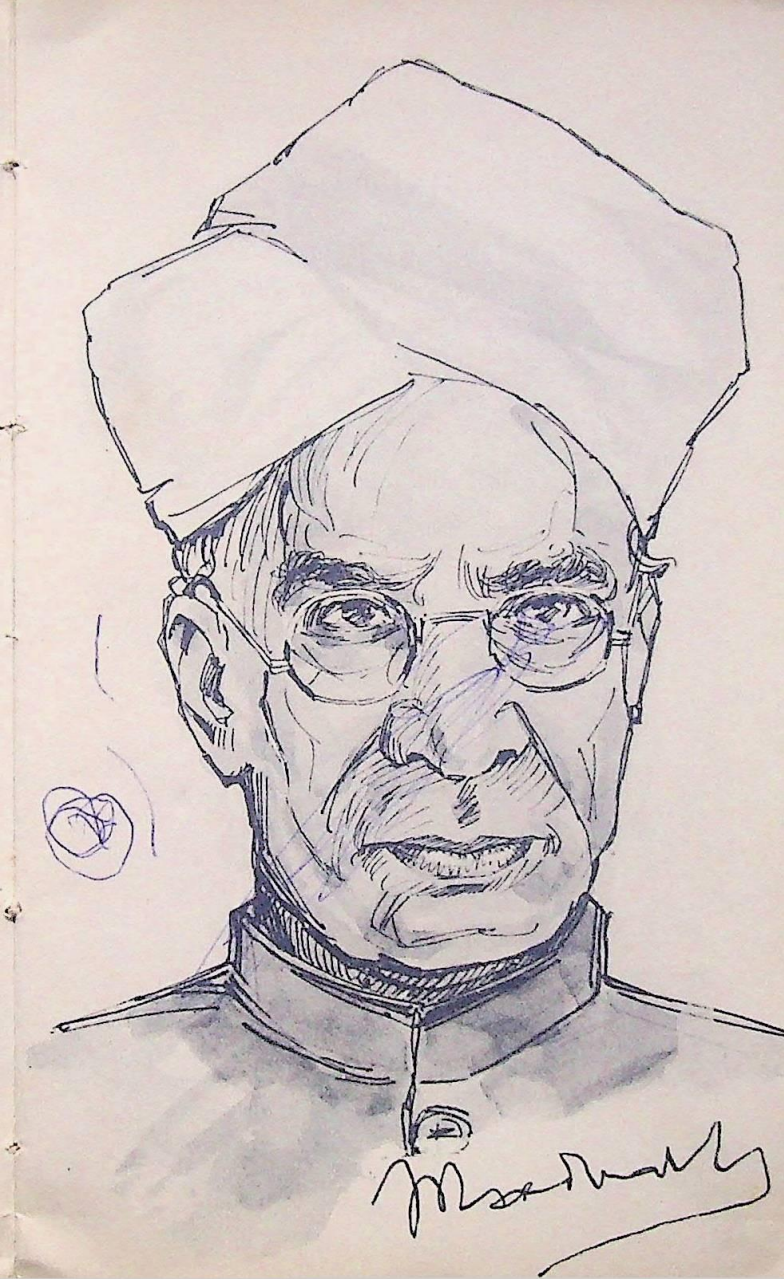
# जवाहरलाल नेहरू

महात्मा गांधी के पश्चात् सर्वोपरि भारतीय नेता तथा प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू अंग्रेज़ी के सुप्रसिद्ध लेखक भी थे। आपने अपनी कृतियों की रचना जेलों में रहते समय की।

आपका जन्म १८८९ में इलाहाबाद में हुआ। पिता पं० मोतीलाल नेहरू प्रसिद्ध वकील तथा कांग्रेसी नेता थे। आप भी महात्मा गांधी के संपर्क में आकर सदा के लिए कांग्रेस के हो गए। आजादी की लड़ाई में आप बार-बार जेल गए। आप अनेक बार राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और लाहौर में रावी तट पर हुए अधिवेशन में आपकी ही अध्यक्षता में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् आप ही भारत के पहले प्रधान-मंत्री चुने गए और मृत्युपर्यंत प्रधानमंत्री रहे।

आपकी प्रमुख कृतियां हैं 'डिस्कवरी ऑव इंडिया', 'ग्लिम्पसेज़ ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री' तथा 'ऑटो-बायग्राफी'। एक अमरीकी लेखक ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया है कि जेलों में बिना किसी संदर्भ ग्रन्थ के आपने विश्व इतिहास जैसे विशाल तथ्यपूर्ण ग्रन्थों की रचना कैसे कर ली।

जवाहरलाल नेहरू
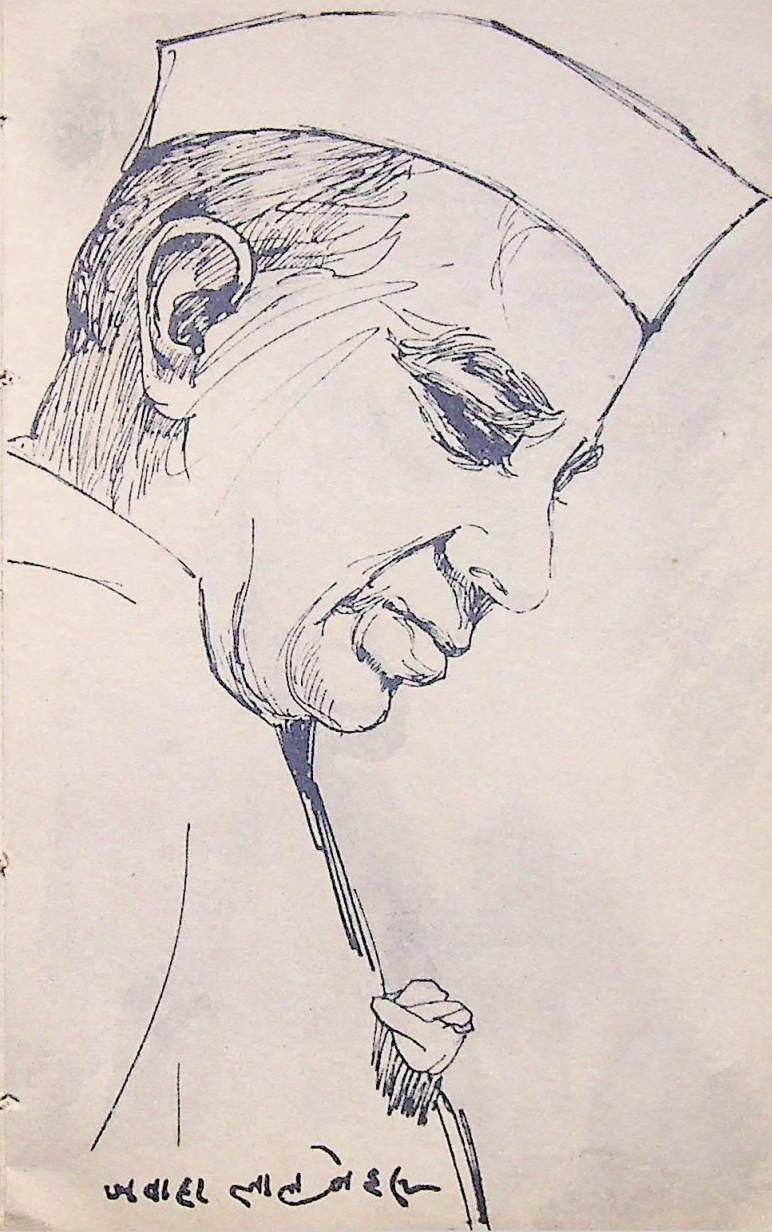
# मैथिलीशरण गुप्त

(स्व०) राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की गणना खड़ी बोली हिन्दी के आरंभिक कवियों में है। आपने जहां एक ओर प्रखर राष्ट्रवादी काव्य-रचना की वहां भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा का भी गायन किया।

गुप्तजी का जन्म १८८६ में झांसी के चिरगांव नामक स्थान में हुआ। बचपन से ही आप कविता लिखने लगे और आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन में उसका संस्कार हुआ। स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप जेलों में भी रहे। स्वाधीनता प्राप्त होने के पश्चात् आप मनोनीत संसद सदस्य बनाए गए।

आपने ५० के लगभग काव्य-ग्रन्थों का सृजन किया है। ये हैं 'जयद्रथ वध', 'भारत भारती', 'साकेत', 'यशोधरा', 'पृथ्वीपुत्र', 'जयभारत', 'मेघनाद वध' 'पलासी का युद्ध', 'रुबाइयाते उमरखय्याम' आदि।
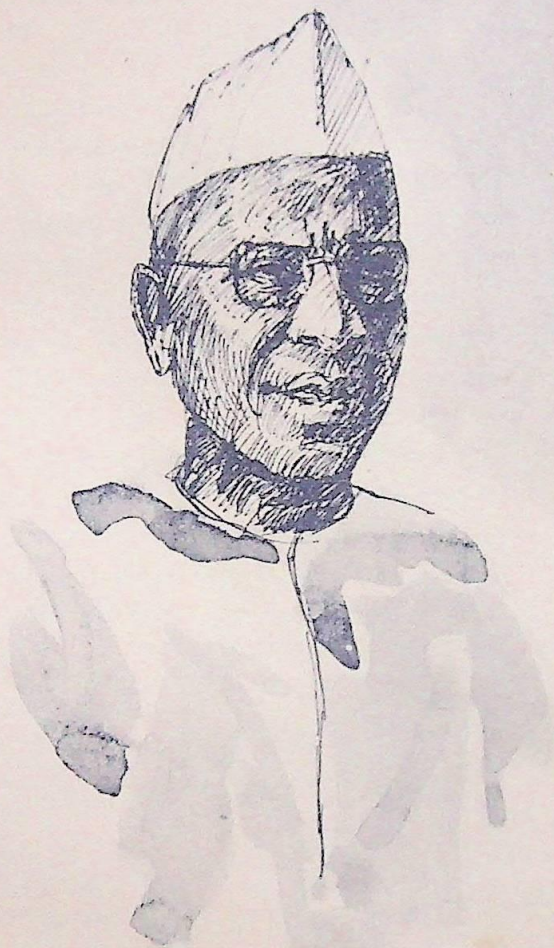
# निराला

हिन्दी की छायावादी कविता के क्षेत्र में स्व० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की उपलब्धियां अन्यतम हैं। उनकी रचनाओं में सतत विद्रोह की भावना अभय तथा जीवन्त अनुभूति की प्राणवान अभिव्यक्ति प्राप्त होती है।

निराला का व्यक्तित्व तेजोद्दीप्त, प्रखर और बहुमुखी रहा है। आपका जन्म मेदिनीपुर में हुआ था। बचपन से ही आपकी काव्य-प्रतिभा प्रकट होने लगी थी। आपकी ६० से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें कविता-संग्रहों के अतिरिक्त उपन्यास, कहानियां और निबंध भी हैं।

आपकी प्रमुख कृतियां ये हैं: 'परिमल', 'अर्चना', 'आराधना', 'गीतगुंज,' 'गीतिका', 'राम की शक्ति-पूजा', 'अनामिका', 'नये पत्ते', 'सुकुल की बीवी', 'प्रभावती', 'चयन' इत्यादि।
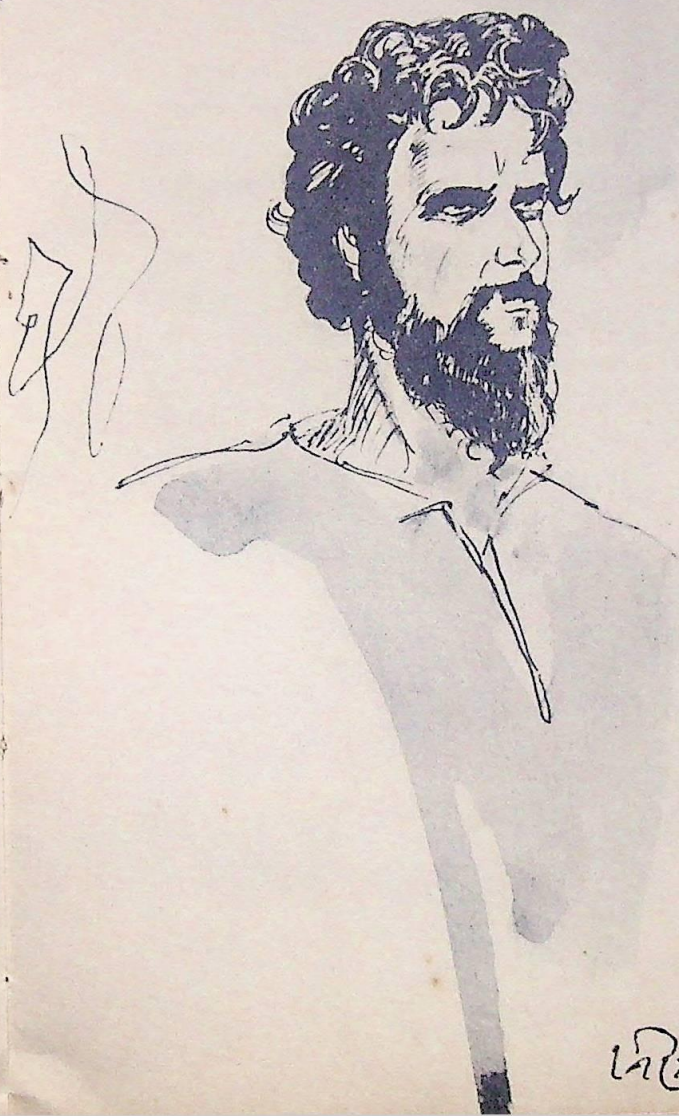
## राहुल सांकृत्यायन

मात्रा और गुण दोनों ही दृष्टियों से (स्व०) राहुल सांकृत्यायन की हिन्दी साहित्य को अपूर्व देन है। आपको 'महापंडित' कहा जाता था। सचमुच आप विद्या के अवतार और ज्ञान के भंडार थे।

बचपन से ही घूमने के प्रति आपको बड़ा लगाव था। परिवार को छोड़कर निकल पड़े और साधु हो गए। फिर उसे भी छोड़ दिया और ज्ञान की खोज में देश-देशांतर घूमे। अनेक विवाह किए—एक रूस में भी किया। घूमने के साथ-साथ लिखते भी रहे। जीवन के अंतिम दिनों में लंका के एक विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन और साहित्य के प्रोफेसर रहे।

आपने धर्म, दर्शन, इतिहास, साम्यवाद, कहानी, उपन्यास सब कुछ लिखा है। प्रमुख ग्रंथ ये हैं: 'वोल्गा से गंगा', 'जय यौधेय', 'विश्व की रूपरेखा', 'दर्शन दिग्दर्शन', 'मध्य एशिया का इतिहास' आदि। अंतिम पुस्तक पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

# जैनेन्द्र कुमार

प्रेमचन्द ने कहा था—जैनेन्द्र भारत के गोर्की हैं। आज के साहित्यकारों में उन जैसा विचारक और मौलिक लेखक शायद दूसरा नहीं है। आपके अब तक ३० के लगभग कहानी-संग्रह, उपन्यास तथा निबंध-ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं, 'कल्याणी', 'त्यागपत्र', 'परख', 'व्यतीत', 'जयवर्धन', 'समय और हम' आदि।

जैनेन्द्र कुमार का जन्म १९०५ में अलीगढ़ में हुआ। असहयोग आन्दोलन के दिनों में कालेज छोड़ा, जेल गए और साथ ही लिखना भी आरंभ किया। शीघ्र ही उनकी गणना हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्यकारों में होने लगी। दिल्ली में रहते हैं और सर्वोदयी विचारधारा के समर्थक हैं। आपका प्रकाशन भी अपना ही है।
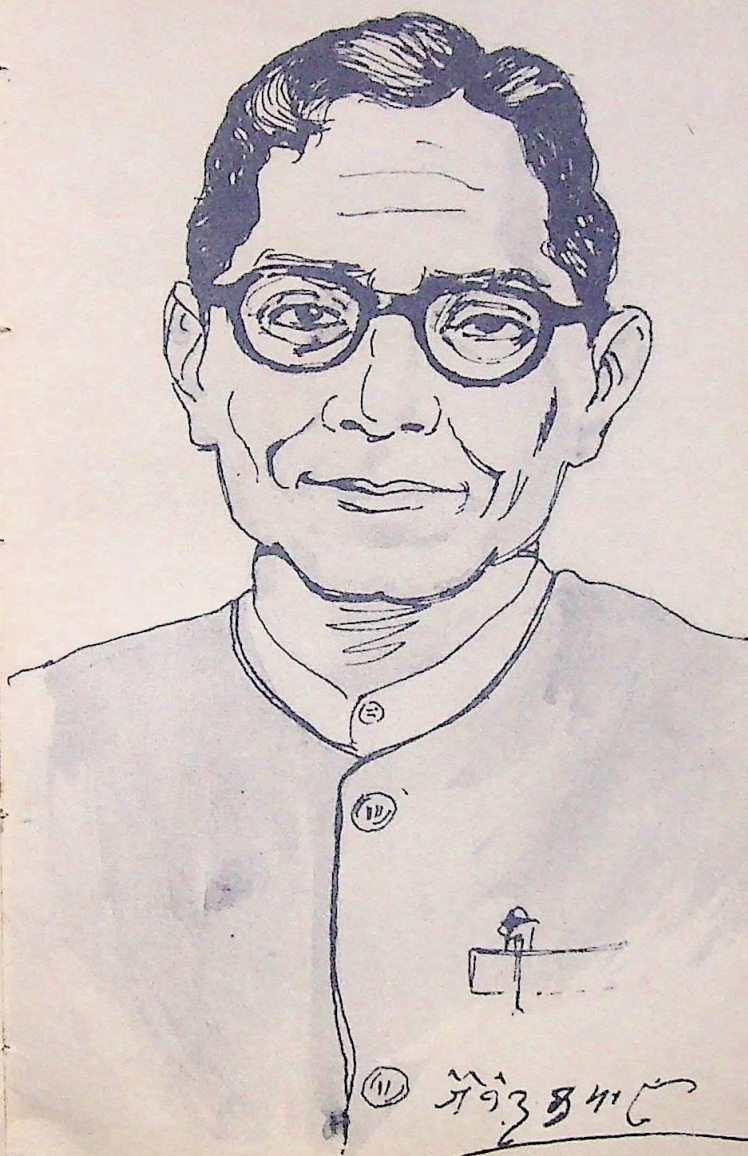
# यशपाल

यशपाल की गणना हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकारों और उपन्यासकारों में की जाती है। आप वामपक्षी विचारधारा को मानते हैं और आपकी रचनाओं में उसका गहरा पुट है।

आपका जन्म १९०३ में हुआ। आपकी मातृ-भाषा डोगरी है। यौवन में पदार्पण करते ही आप क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लेने लगे। इसीके साथ आपने लिखना भी आरंभ किया। अपनी रच-नाओं में आपने भारतीय समाज के कुसंस्कारों की धज्जियां उड़ा दीं और उसे परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने को प्रेरित किया।

आपने अब तक ४० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें कहानी-संग्रह, उपन्यास, नाटक, निबंध और संस्मरण सभी हैं। प्रमुख रचनाएं ये हैं : 'दादा कामरेड', 'पिंजरे की उड़ान', 'दिव्या', 'गांधीवाद की शव परीक्षा', 'न्याय का संघर्ष', 'सिंहावलोकन' (३ खण्ड), 'नशे नशे की बात', 'झूठा सच' इत्यादि। 'झूठा सच' दो खण्डों में प्रकाशित बृहत् उपन्यास है जिसमें भारत-विभाजन की घटना को विस्तार से चित्रित किया गया है।

आप स्थायी रूप से लखनऊ में रहते हैं। वहां आपका अपना प्रकाशन भी है।

यशपाल
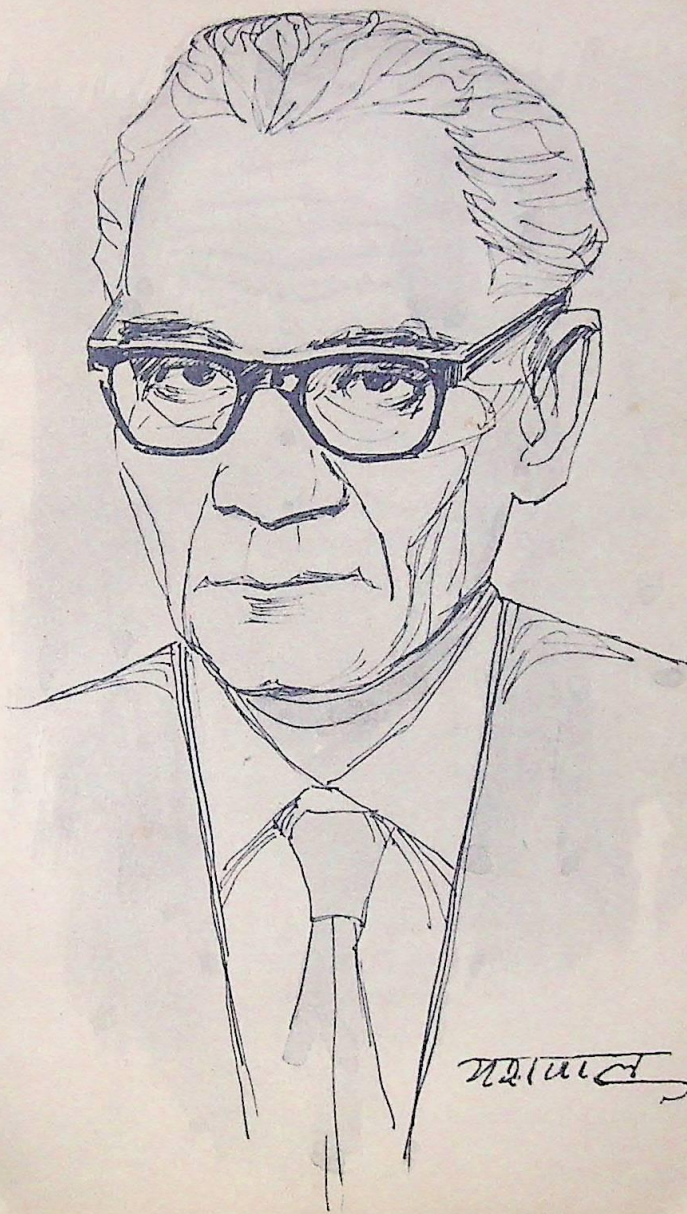
# सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख कवियों में हैं। हिन्दी साहित्य में उनकी कविताओं का अपना अलग व्यक्तित्व है। प्रकृति की गोद में पले होने के कारण उनकी रचनाओं में भी उसकी स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

पंतजी का जन्म १९०० में अलमोड़ा जिले के कौसानी नामक स्थान में हुआ। आपकी काव्य-प्रतिभा बहुत छोटी अवस्था से ही प्रस्फुटित होने लगी। १९२१ के असहयोग आन्दोलन में आपने पढ़ाई छोड़ दी। फिर प्रयाग में रहकर स्वाध्याय और काव्य-रचना में लगे रहे। आपके २० संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें से प्रमुख हैं: 'पल्लव', 'वीणा', 'ग्राम्या', 'ज्योत्स्ना', 'उत्तरा', 'युगवाणी', 'पांच कहानियां' इत्यादि। १९६० में 'कला और बूढ़ा चांद' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। गत वर्ष आप 'लोकायतन' पर सोवियत भूमि के नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

अपनी कविता के संबंध में आप कहते हैं, "व्यक्तिगत सुख-दुःख के सत्य को अथवा अपने मानसिक संघर्ष को मैंने अपनी रचनाओं में वाणी नहीं दी है क्योंकि वह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है। मैंने उससे ऊपर उठने की चेष्टा की है।"

आप इलाहाबाद में रहते हैं और आकाशवाणी
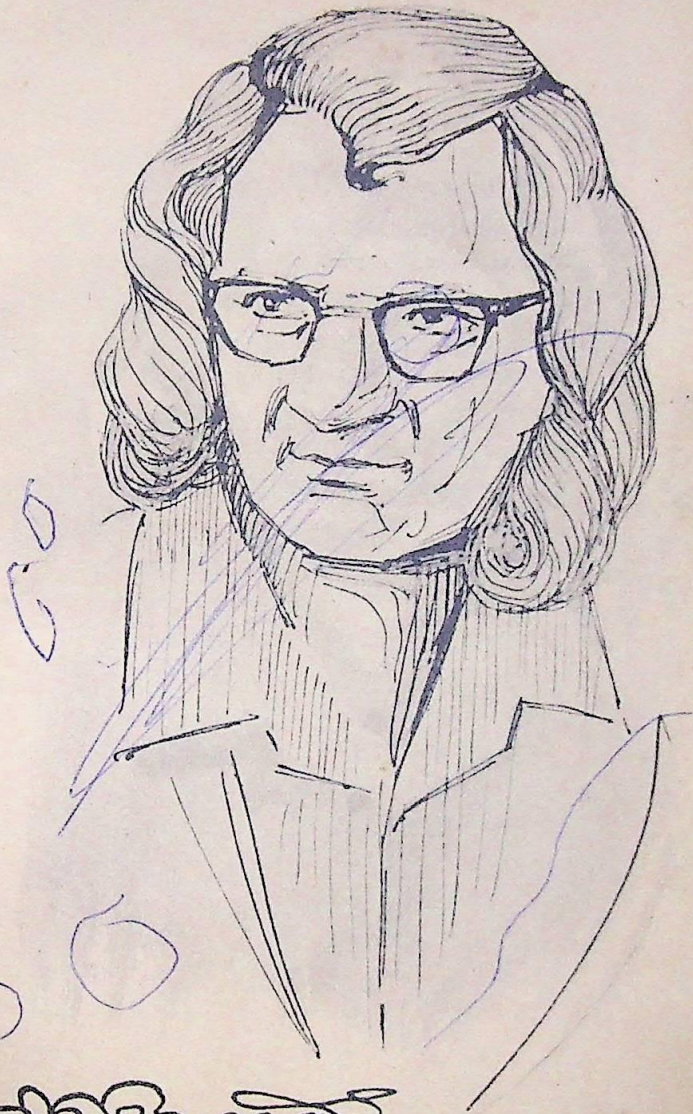
# दिनकर

दिनकर हिन्दी की क्रांतदर्शी तथा बलोद्दीप्त कविता के अन्यतम प्रतिनिधि हैं। कवि के रूप में उन्होंने अपनी हुंकारमयी वाणी से समस्त हिन्दी-भाषी जनता तथा साहित्य को झकझोर दिया है।

आपका जन्म १९०८ में मुंगेर ज़िले के सिमरिया ग्राम में हुआ था। पटना कालेज से ग्रेजुएट होने के बाद वे सरकारी नौकरी में चले गए और राष्ट्रवादी कविता लिखने लगे। सरकार ने इसके लिए आपको बहुत तंग किया पर आप झुके नहीं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् वे नौकरी छोड़कर संसद् सदस्य बने। फिर कुछ दिन भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहने के बाद अब भारत सरकार में एक उच्च पद पर कार्य कर रहे हैं।

आपके एक दर्जन से अधिक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें प्रमुख हैं: 'रेणुका', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी' आदि। भारतीय संस्कृति के विवेचन में आपने 'संस्कृति के चार अध्याय' लिखा जिसपर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। आप १९५९ में 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किए गए।

रामधारीसिंह दिनकर

# आचार्य चतुरसेन

आचार्य चतुरसेन बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी साहित्य में आपकी महत्त्वपूर्ण देन है। साढ़े चार सौ कहानियों के अतिरिक्त आपने बत्तीस नाटक और अनेक उपन्यास लिखे। साथ ही गद्यकाव्य, इतिहास, धर्म, राजनीति, समाज, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि विभिन्न विषयों पर भी लेखनी चलाई। आपकी प्रकाशित रचनाओं की संख्या १८६ है।

आपका जन्म १८९१ में बुलंदशहर ज़िले के एक गांव में हुआ। आपने आयुर्वेद की शिक्षा ली और वैद्यक के साथ-साथ लेखन-कार्य भी आरंभ किया। अपनी रचनाओं की ओजस्विता के कारण आप शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए।

आचार्यजी की प्रमुख कृतियां हैं: 'वैशाली की नगरवधू', 'सोमनाथ', 'वयं रक्षामः', 'सोना और खून' 'बगुला के पंख' इत्यादि।

आपका अधिकांश जीवन दिल्ली में बीता और यहीं १९६० में देहांत हुआ। आपकी गणना आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ लेखकों में होती है।
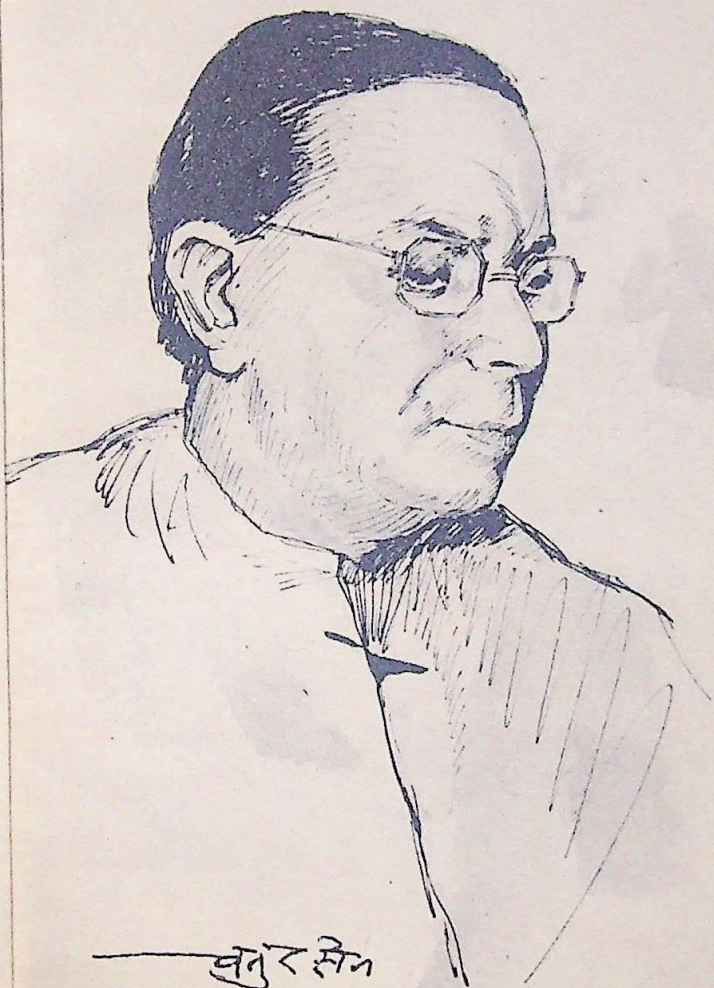
# महादेवी वर्मा

हिन्दी के छायावादी कवियों में महादेवी वर्मा का प्रमुख स्थान है। आपकी रचनाओं में भावों की गहराई तथा मार्मिकता के साथ-साथ अपने इष्टदेव के प्रति तन्मयता और तल्लीनता भी मुखर है जिसकी गूंज पाठक के मर्मस्थल को झंकृत कर देती है।

आपका जन्म १९०७ में फर्रुखाबाद में हुआ। यौवन में प्रवेश करते ही आपके हृदय के कोमल भाव अभिव्यक्ति के लिए मुखर हो उठे और आप कविता लिखने लगीं। सन् १९३० में जब आपका प्रथम संग्रह 'नीहार' प्रकाशित हुआ तो साहित्य-जगत् में धूम मच गई। आप स्वयं चित्रकर्त्री भी हैं इसलिए आपकी कविताएं चित्रों से सजी होती हैं।

फिर आपके 'नीहार', 'नीरजा' और 'रश्मि' प्रकाशित हुए और इन चारों का संकलन 'यामा' के रूप में निकला। इसके बाद 'दीपशिखा' प्रकाशित हुआ। आपने कुछ संस्मरण भी लिखे हैं जो अपनी शैली तथा मार्मिकता के कारण बहुत समादृत हुए। इनके नाम हैं : 'स्मृति की रेखाएं' और 'अतीत के चलचित्र'।

आप इलाहाबाद में स्थायी रूप से रहती हैं और महिला विद्यापीठ की प्रिंसिपल हैं।

# बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

हिन्दी कविता के क्षेत्र में (स्व०) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' प्रखर राष्ट्रवादी तथा रसपूर्ण कविता के लिए विख्यात हैं। आपने यद्यपि कम ही लिखा परन्तु उसीके बल पर प्रथम श्रेणी के कवियों में अपना स्थान बना लिया। स्वाधीनता आन्दोलन को प्रेरित करने में आपकी रचनाओं ने बड़ी सहायता दी।

'नवीन' जी का जन्म १८९७ में शाजापुर के मयाना नामक स्थान में हुआ था। विद्यार्थी-काल से ही आप कांग्रेस के राष्ट्रवादी आन्दोलन में भाग लेने लगे और कई बार जेल भी गए। इसीके साथ-साथ आप कविता भी लिखते रहे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् आप संसद् सदस्य चुने गए और मृत्युपर्यंत (१९६०) रहे।

आपके ये ग्रन्थ प्रकाशित हैं: 'कुमकुम', 'रश्मि-रेखा', 'अपलक', 'क्वासि', 'विनोबा स्तवन', 'उर्मिला', और 'हम विषपायी जनम के'। अंतिम ग्रन्थ आपके देहान्त के पश्चात् प्रकाशित हुआ।
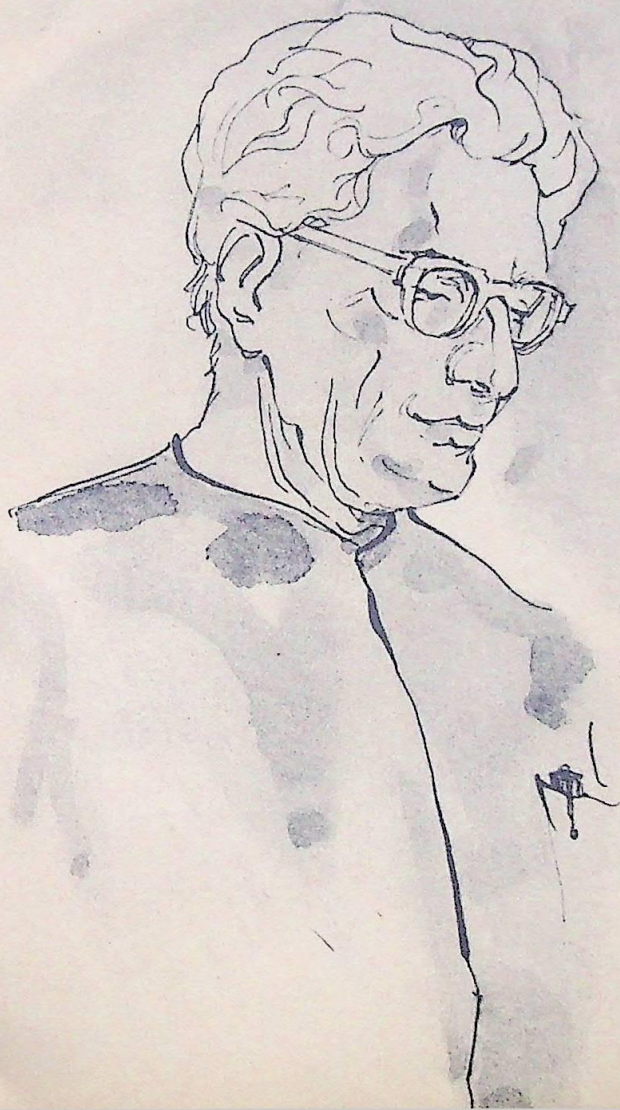
# बच्चन

बच्चन की 'मधुशाला' संभवत: आधुनिक हिन्दी-काव्य की सबसे लोकप्रिय रचना है। तब से आपने ५० के लगभग ग्रन्थों की रचना की है जो सभी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

आपका जन्म १६०७ में प्रयाग में हुआ था। शिक्षा प्रयाग तथा काशी विश्वविद्यालयों में हुई। दस वर्ष तक आप प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के लेक्चरर रहे। फिर दो वर्ष इंग्लैंड में रहकर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद भारत सरकार के विदेश विभाग में हिन्दी के विशेषज्ञ नियुक्त किए गए। अब मनोनीत संसद् सदस्य हैं।

बच्चनजी की रचनाओं में प्रमुख ये हैं: 'मधु-बाला', 'मधुकलश', 'एकांत संगीत', 'सतरंगिनी', 'प्रणय-पत्रिका', 'निशा निमंत्रण', 'आकुल अंतर', 'मिलन यामिनी', 'आरती और अंगारे', 'त्रिभंगिमा', 'चार खेमे चौंसठ खूंटे', 'दो चट्टानें' इत्यादि। आपने ईट्स की कविताओं का अनुवाद 'मरकत द्वीप का स्वर' नाम से प्रकाशित किया है। रूसी कविताओं के 'चौंसठ रूसी कविताएं' नामक अनुवाद पर १६६६ में आपको सोवियत भूमि का नेहरू पुरस्कार मिला है।

आपकी 'मधुशाला' का अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है।

# अज्ञेय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन है। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रवर्तन करनेवालों में आप मूर्धन्य हैं। आपने कविता में प्रयोगवादी शैली को जन्म देकर उसकी धारा ही बदल दी। उपन्यास के क्षेत्र में भी आपने विषय तथा शैली सभी दृष्टियों से क्रांति उपस्थित कर दी।

आपका जन्म १९११ में देवरिया ज़िले के कसिया नामक स्थान में हुआ। पिता के साथ, जो भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग में अधिकारी थे, आपने सारे देश का भ्रमण किया। फिर क्रान्तिकारी आन्दोलन से आपका लगाव हो गया और उसमें भाग लेने लगे।

इसीके साथ आपका लेखक-जीवन आरंभ हो गया। 'शेखर : एक जीवनी' ने प्रकाशित होते ही साहित्य-जगत् में धूम मचा दी। फिर 'नदी के द्वीप' प्रकाशित हुआ और यह भी अपने ढंग का अकेला उपन्यास माना गया। इसके बाद 'अपने अपने अजनबी' निकला जो अस्तित्ववादी उपन्यास है।

आपकी काव्य-रचनाएं ये हैं : 'भग्नदूत', चिंता', हरी घास पर क्षणभर', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'आंगन के पार द्वार' आदि। अंतिम को १९६५ में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आपने अनेक देशों का भ्रमण किया है। अब दिल्ली में रहते हैं और 'दिनमान' का संपादन करते हैं।
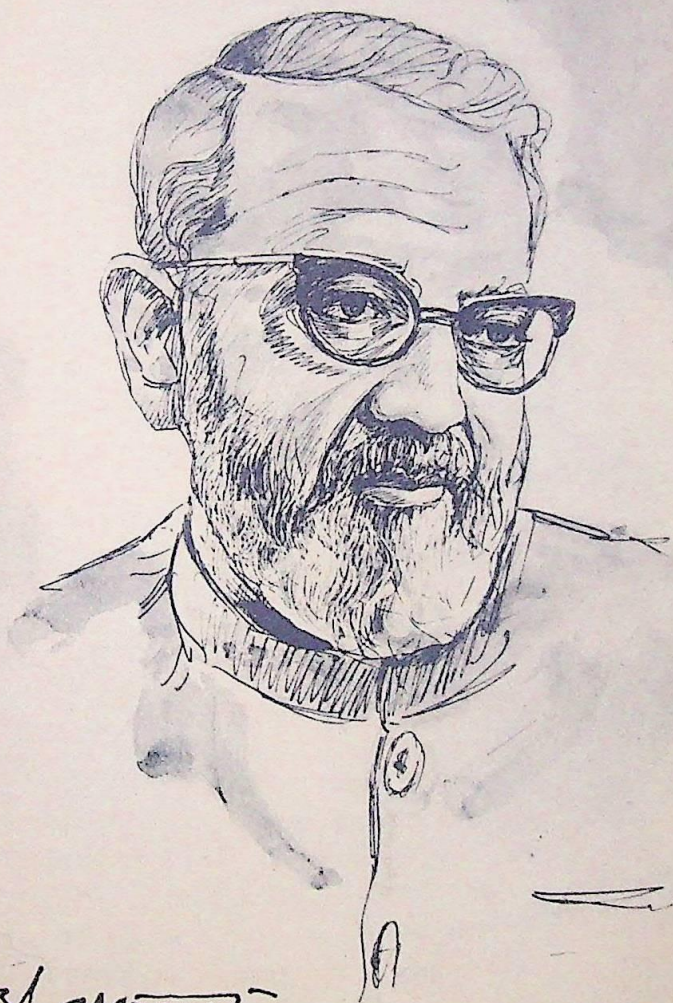
# रवीन्द्रनाथ ठाकुर

भारतीय साहित्यकारों में अब तक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को ही नोबल पुरस्कार (१९१३ में) प्राप्त हुआ है। आप विलक्षण प्रतिभा के धनी और कवि, कहानी-उपन्यासकार, शिक्षक, विचारक, चित्रकार और संगीतज्ञ थे। आपने विश्वविख्यात शांतिनिकेतन की स्थापना की और भारतीय संस्कृति के आदर्शों को पुनरुज्जीवित किया।

आपका जन्म १८६१ में हुआ। पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर प्रसिद्ध ब्रह्मसमाजी नेता थे। शिक्षा घर पर ही हुई और लिखना भी बचपन में ही आरंभ कर दिया। फिर शांतिनिकेतन और श्रीनिकेतन के संचालन में लग गए।

आपकी कृतियां संसार की अनेक भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।
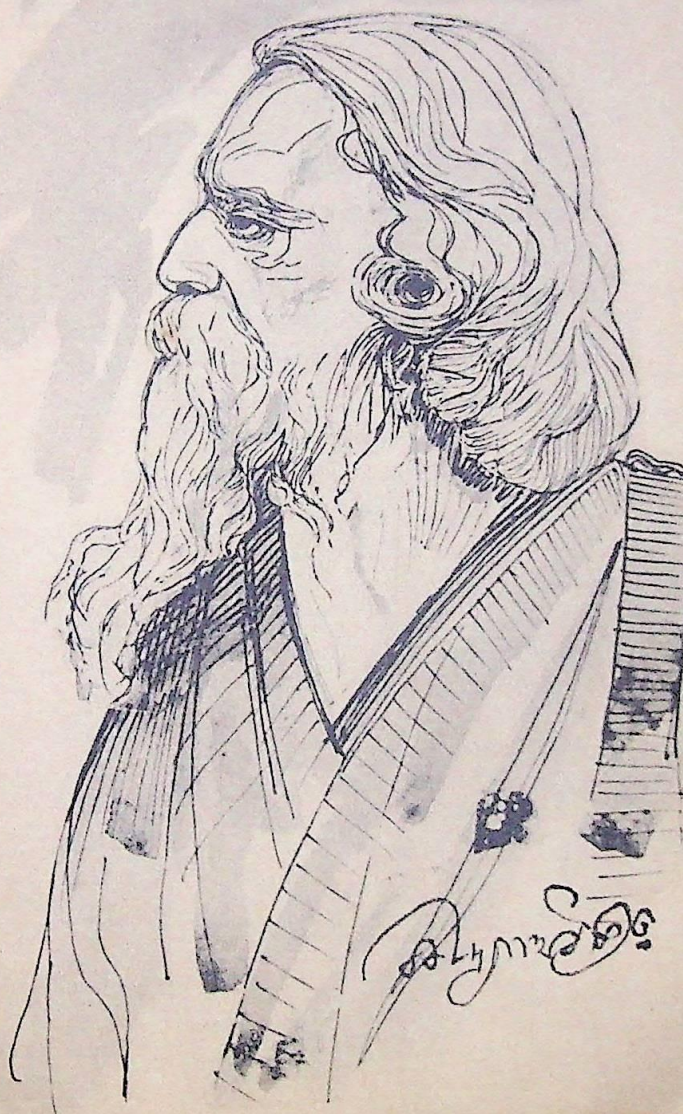
# शरत्चन्द्र चटर्जी

शरत्चन्द्र चटर्जी संभवत: भारत के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार हैं। आपके उपन्यास बंगला में लिखे गए, परन्तु सभी भारतीय भाषाओं में अनूदित होकर जनता के हृदयहार बन गए। भारतीय नारी का आपने जैसा सेवाभावी और कोमल चित्रण किया, वह अद्वितीय है।

आपका जन्म १८७६ में हुआ। बचपन से ही आप घुमक्कड़ तबियत के थे और बड़े होने पर बर्मा चले गए। लिखना आपने बहुत बाद में आरम्भ किया, पर लोकप्रियता इतनी शीघ्र मिली कि फिर निरन्तर लिखने लगे। आपके बीसियों उपन्यास हैं जिनमें से प्रमुख हैं : 'चरित्रहीन', 'शेष प्रश्न', 'गृहदाह', 'देवदास', 'परिणीता' आदि। इनमें से अनेक की फिल्में भी बन चुकी हैं।

जीवन के अन्तकाल में आप कलकत्ता आ गए और वहीं १९३८ में आपकी मृत्यु हुई।
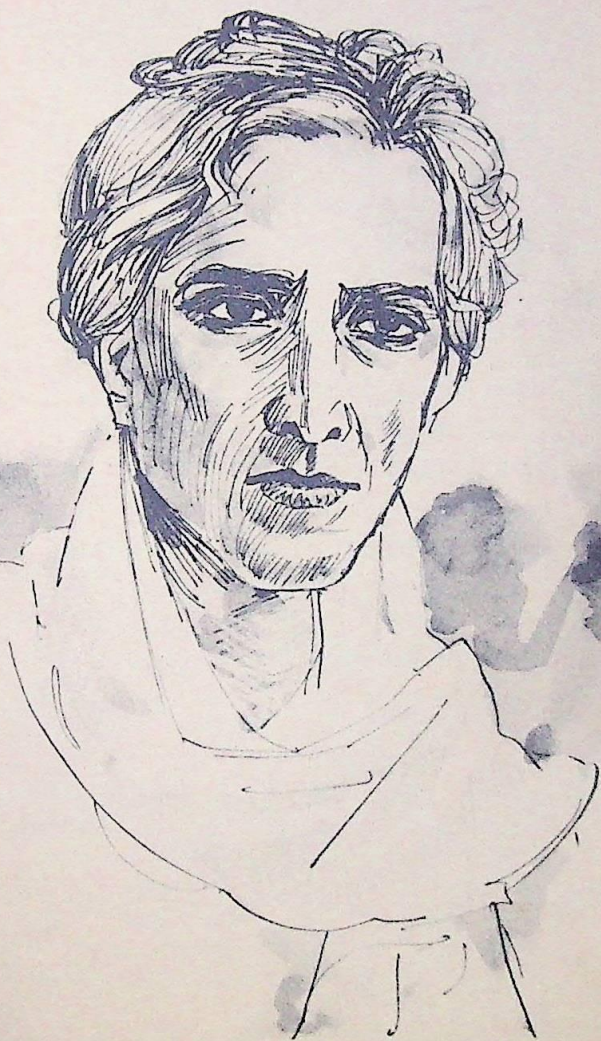
# ताराशंकर बनर्जी

बंगला के अग्रणी उपन्यासकार। अब तक ४० से ऊपर उपन्यास, कहानी-संग्रह और नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं : 'आरोग्य निकेतन', 'मन्वन्तर', 'ना' आदि।

जन्म वीरभूमि ज़िले के एक गांव में १८९८ में हुआ। मैट्रिक पास करने के बाद आप राजनीति में पड़ गए। क्रांतिकारियों के संपर्क में आए, आन्दोलन में भाग लिया और जेल गए। १९३० से साहित्य में प्रवेश किया और सफलता पाई। पैनी निगाह, गहरी पर्यवेक्षण-शक्ति तथा मौलिक दृष्टिकोण आपकी रचनाओं के विशिष्ट गुण हैं। १९४० में साहित्य-साधना के लिए आपको 'शरत् स्मृति पुरस्कार' मिला एवं १९५५-५६ में 'आरोग्य निकेतन' पर 'रवीन्द्र पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इसीपर आपको बाद में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

सन् १९६७ में आपको अपने विख्यात उपन्यास 'गणदेवता' पर एक लाख रुपये का ज्ञानपीठ साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ।

তারাশংকর

# काज़ी नज़रुल इस्लाम

आप बंगला के स्वनामधन्य राष्ट्रवादी कवि हैं। आपका जन्म बर्दवान ज़िले के चुरुलिया नामक ग्राम में सन् १८९९ में हुआ था। बचपन से ही आपने कविताएं लिखना आरंभ कर दिया था और बंगला साहित्य में शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए। कविताओं के अतिरिक्त आपने गीत और कहानियां भी लिखा हैं। आपकी रचनाएं अत्यंत ओजपूर्ण और मार्मिक होती हैं।

अब तक आपकी ३० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें प्रमुख हैं, 'अग्निवीणा', 'डोलन चंपा', 'बंधनहारा', 'संचिता' और 'नज़रुल गीतिका'। इसके अतिरिक्त आपने हाफ़िज़ की रुबाइयों का अनुवाद भी किया है।

गत अनेक वर्षों से आप रुग्ण हैं। आप कलकत्ता में स्थायी रूप से रहते हैं।

# वल्लतोल

(स्व०) वल्लतोल नारायण मेनन की गणना मलयालम के महान कवियों में की जाती है। कवि के अतिरिक्त आप कलाकार भी थे और कथकलि नृत्य के विशेष ज्ञाता थे।

वल्लतोल का जन्म १८७८ में केरल के चेन्नरा नामक स्थान में हुआ। काव्य-प्रतिभा आपमें बचपन से ही जाग उठी थी। आपने ७० से ऊपर ग्रंथ लिखे हैं जिनमें 'साहित्य मंजरी' सबसे प्रसिद्ध है। इसके आठ खंड हैं और सभी में कविताएं हैं। इसके अतिरिक्त 'ऋतु विलासम्' 'बधिर विलापम्' आदि भी प्रसिद्ध हैं। आपने ऋग्वेद और रामायण का अनुवाद भी किया है।

१९५८ में आपका देहावसान हुआ।
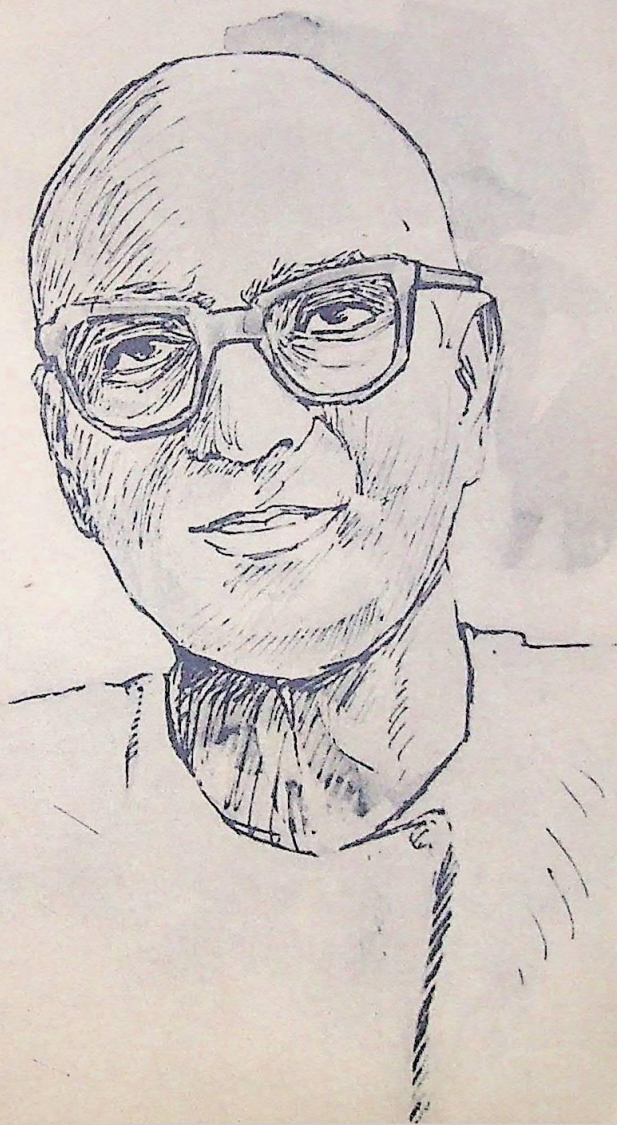
# जी० शंकर कुरुप

जी० शंकर कुरुप मलयालम के प्रतिष्ठित कवि हैं और गत वर्ष आपको भारतीय ज्ञानपीठ का सर्व-प्रथम साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपकी कृतियां भारतीय संस्कृति के प्राचीन आदर्शों से प्रेरित हैं और अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं। केरल के लोग आपको केवल 'जी' कहकर संबोधित करते हैं।

आपका जन्म १९०१ में हुआ था। अध्यापक के रूप में आपने अपना जीवन आरंभ किया। विश्व-विद्यालय की कोई उपाधि न होने पर भी आप मद्रास विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनाए गए। आपके लिए विश्वविद्यालय ने विशेष अनुमति प्रदान की। रिटायर होने के पश्चात् आप आकाशवाणी के त्रिवेन्द्रम केन्द्र में चीफ प्रोड्यूसर रहे।

अब तक आपके २० से ऊपर कविता-संग्रह तथा कई निबंध-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। 'ओडक्कुज़ल' इनमें सबसे प्रसिद्ध है। इसकी कविताएं व्यक्तिगत अनु-भूति पर आश्रित हैं और रहस्यवादी चेतना से परिपूर्ण हैं। इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो गया है।

ସଚ୍ଚି ରାଉତରାୟ

# काका कालेलकर

काका कालेलकर नाम से सुपरिचित गांधीवादी विचारक और लेखक का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। आप अपने मौलिक चिन्तन तथा विविध सामाजिक समस्याओं पर नव विचार देने के लिए प्रख्यात हैं।

आपका जन्म महाराष्ट्र के सतारा नामक नगर में १८८५ में हुआ। आपकी मातृभाषा गुजराती है। आपकी शिक्षा बंबई विश्वविद्यालय में हुई। शीघ्र ही आप महात्मा गांधी के संपर्क में आए और राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लेने लगे। कई बार जेल भी गए। फिर आपने रचनात्मक कार्यों में अपना जीवन लगा दिया। आप संसद् सदस्य हैं तथा अनेक संस्थाओं से संबद्ध हैं।

आपकी अब तक ३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। प्रमुख रचनाएं ये हैं : 'स्मरण यात्रा', 'लोकमाता', 'धर्मोदय', 'हिमालयनो प्रवास', 'जीवननो आनंद' इत्यादि।

आप 'मंगल प्रभात' नामक साप्ताहिक का संपादन भी करते हैं।

काका कालेलकर

# मामा वरेरकर

(स्व०) मामा वरेरकर के नाम से प्रख्यात मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक का पूरा नाम-भार्गवराम विट्ठल वरेरकर था। आपका जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी ज़िले में स्थित चिपलूण नामक स्थान में १८८३ में हुआ था। बचपन से ही आपकी रुचि नाटक खेलने में थी। फिर आप स्वयं भी नाटक लिखने लगे। आपकी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं का अच्छा चित्रण मिलता है।

आपके ग्रन्थों की संख्या १६० से ऊपर है। इसमें नाटकों के अतिरिक्त उपन्यास, संस्मरण, कविताएं तथा निबंध भी हैं। कुछ प्रमुख रचनाएं ये हैं : 'कुंज-विहारी', 'हाच मुलाचा बाप', 'संन्यासाचा संसार', 'सत्तेचे गुलाम', 'विधवा कुमारी', 'अपूर्व बंगाल', 'माझा नाटकी संसार' इत्यादि। आपकी अनेक पुस्तकों का हिन्दी, गुजराती और मलयालम में अनुवाद हुआ है।

आपने शरत् तथा बंकिम के सभी उपन्यासों का मराठी में अनुवाद किया है। अनेक वर्ष आप मनोनीत संसद् सदस्य भी रहे और 'पद्मविभूषण' की उपाधि से सम्मानित किए गए।

मामा वरेरकर
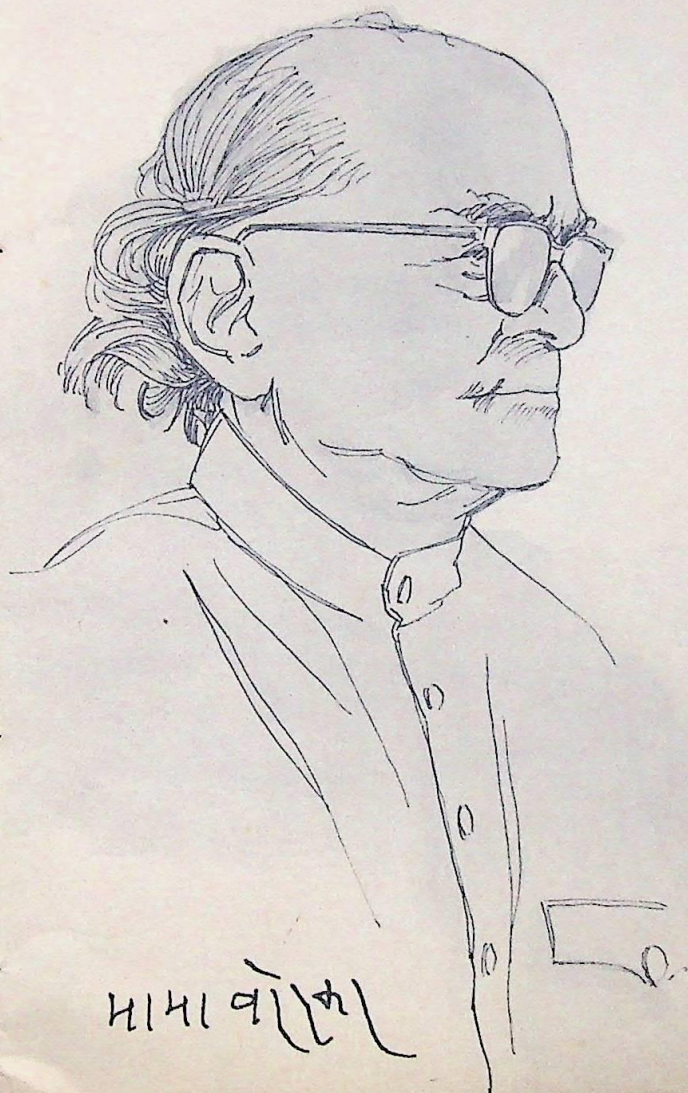
# श्री श्री

श्री श्री के नाम से प्रख्यात श्रीरंगम् श्रीनिवास राव तेलुगु के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक हैं । आपके कारण आधुनिक तेलुगु-साहित्य बहुत समृद्ध और उन्नत हुआ है ।

श्री श्री का जन्म १९१० में विशाखापट्टन में हुआ था । शिक्षा आपकी मद्रास विश्वविद्यालय में हुई । आपने विद्यार्थी-जीवन से ही कविता लिखना आरंभ कर दिया था । कविता के अतिरिक्त आपने कहानियां तथा नाटक भी लिखे हैं और कुछ विदेशी कृतियों का अनुवाद किया है ।

आपकी प्रमुख रचनाएं हैं : 'महाप्रस्थानम्', 'मारो प्रपंचम्', 'चरम रात्रि', 'अम्मा' आदि ।

आप मद्रास में स्थायी रूप से रहते हैं ।

# ग़ालिब

मिर्ज़ा असदुल्ला खां जो पहले 'असद' उपनाम से और फिर 'ग़ालिब' उपनाम से प्रसिद्ध हुए, २७ दिसम्बर, १७३७ ई० में आगरा में पैदा हुए और १५ फरवरी, १८६९ को दिल्ली में आपका देहान्त हुआ। क़ब्र निज़ामुद्दीन औलिया के मज़ार की बगल में है।

उर्दू भाषा के एकमात्र शायर हैं जिनके व्यक्तित्व और साहित्य पर सबसे अधिक लिखा गया है और जिनके 'दीवान' के इतने संस्करण निकल चुके हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती।

اسد اللہ خاں غالب

# 'जिगर' मुरादाबादी

उर्दू ग़ज़ल के इस सदी के बादशाह अली सिकन्दर 'जिगर' मुरादाबादी १८९० में पैदा हुए। आप उन सौभाग्यशाली शायरों में से थे, जिनकी कलाकृतियां अपने जीवनकाल में ही 'क्लासिक' बन जाती हैं; बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि 'जिगर' साहब ने उर्दू साहित्य के इतिहास में अपना नाम अपने हाथ से मोटे अक्षरों में लिख दिया था।

साहित्य अकादमी ने भी उनके काव्य-संग्रह 'आतशे-गुल' पर पांच हजार रुपये का पुरस्कार देकर उन्हें सम्मानित किया था।

९ सितम्बर, १९६० को गोंडा में आपका स्वर्ग-वास हुआ।

# 'फ़िराक़' गोरखपुरी

रघुपतिसहाय नाम 'फ़िराक़' उपनाम। १८९६ में गोरखपुर में जन्म हुआ। म्योर सैण्ट्रल कालेज, इलाहाबाद से बी० ए० करने के बाद सरकार ने डिप्टी कलक्टरी का औहदा पेश किया, लेकिन उसे ग्रहण करने की बजाय आप कांग्रेस में शामिल होकर जेल चले गए। १९२७ में रिहा होकर क्रिश्चियन कालेज, लखनऊ में और फिर सनातन धर्म कालेज में उर्दू के लेक्चरर नियुक्त हुए। इस बीच में आपने एम० ए० कर लिया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के लैक्चरर हो गए जहां से कुछ ही वर्ष पूर्व रिटायर हुए हैं।

आज के भारत में आपकी टक्कर का कोई उर्दू शायर नहीं है।
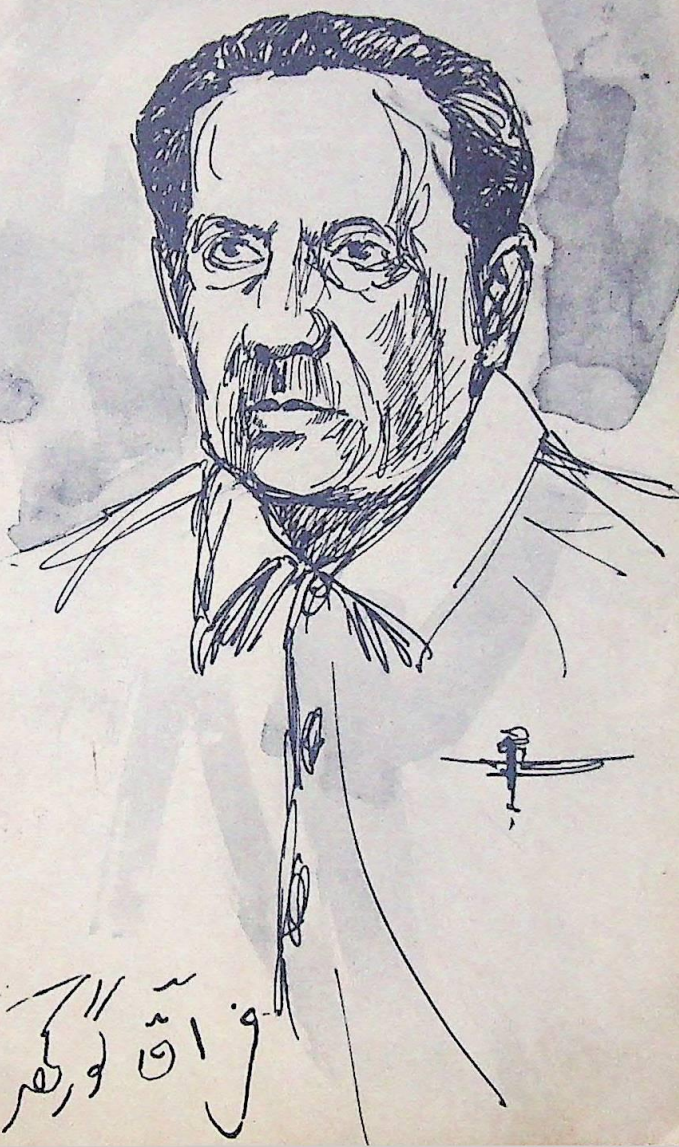
# कृश्न चन्दर

पचास के लगभग उपन्यास, कहानी-संग्रह तथा नाटक पुस्तकों के लोकप्रिय लेखक। जन्म १९१४; लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० और एल-एल० बी०; पर वकालत की प्रैक्टिस कभी नहीं की। विद्यार्थी-काल से ही उर्दू में लिखना आरंभ कर दिया। अनेक रचनाएं भारत की अनेक तथा विदेश की रूसी, अंग्रेज़ी, चीनी, चेक, पोलिश, हंगेरियन आदि भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। आठ हज़ार का नेहरू पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

"आयु का अधिकांश कश्मीर में गुज़ार दिया। कश्मीर की सुन्दरता और निर्धनता से बहुत प्रभावित हुआ हूं और सामूहिक रूप से सुन्दरता को पा लेने और निर्धनता को खो देने को ही मानवता की आधारभूत समस्याएं समझता हूं।"

अब बम्बई में रहते हैं। साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ फिल्मी कहानियां और संवाद भी लिखते हैं।
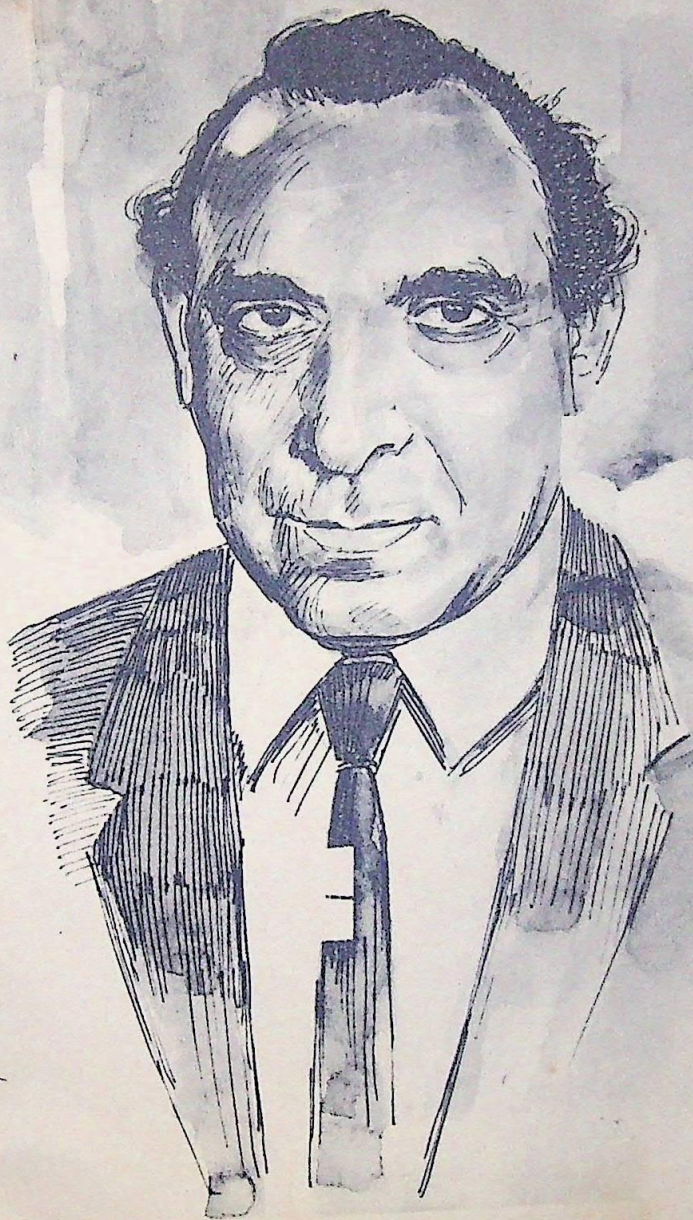
# राजेन्द्रसिंह बेदी

अनेक उपन्यास, कहानी-संग्रह और नाटकों के प्रतिष्ठित लेखक—१९६६ में साहित्य अकादमी ने 'इक चादर मैली सी' को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

१९१५ में लाहौर में जन्म, एफ० ए० तक शिक्षा। पहले अंग्रेज़ी और पंजाबी में लिखना शुरू किया, फिर उर्दू में लिखने लगे। ज़िन्दगी को बहुत गहराई से देखा और उसी स्तर पर साहित्य में व्यक्त किया। कई जगह घूम-फिरकर बंबई चले गए और अब वहीं हैं। फिल्मों के संवाद आदि लिखते हैं। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास अंग्रेज़ी में भी अनूदित हो गया है और इसपर फिल्म भी बन रही है।

अब तक आपके पांच कहानी-संग्रह 'दाना-ओ-दाम', 'ग्रहन', 'कोख़जली', 'लम्बी लड़की' और 'जोगिया', एक नाटक-संग्रह 'सात लेख' तथा उपर्युक्त उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।
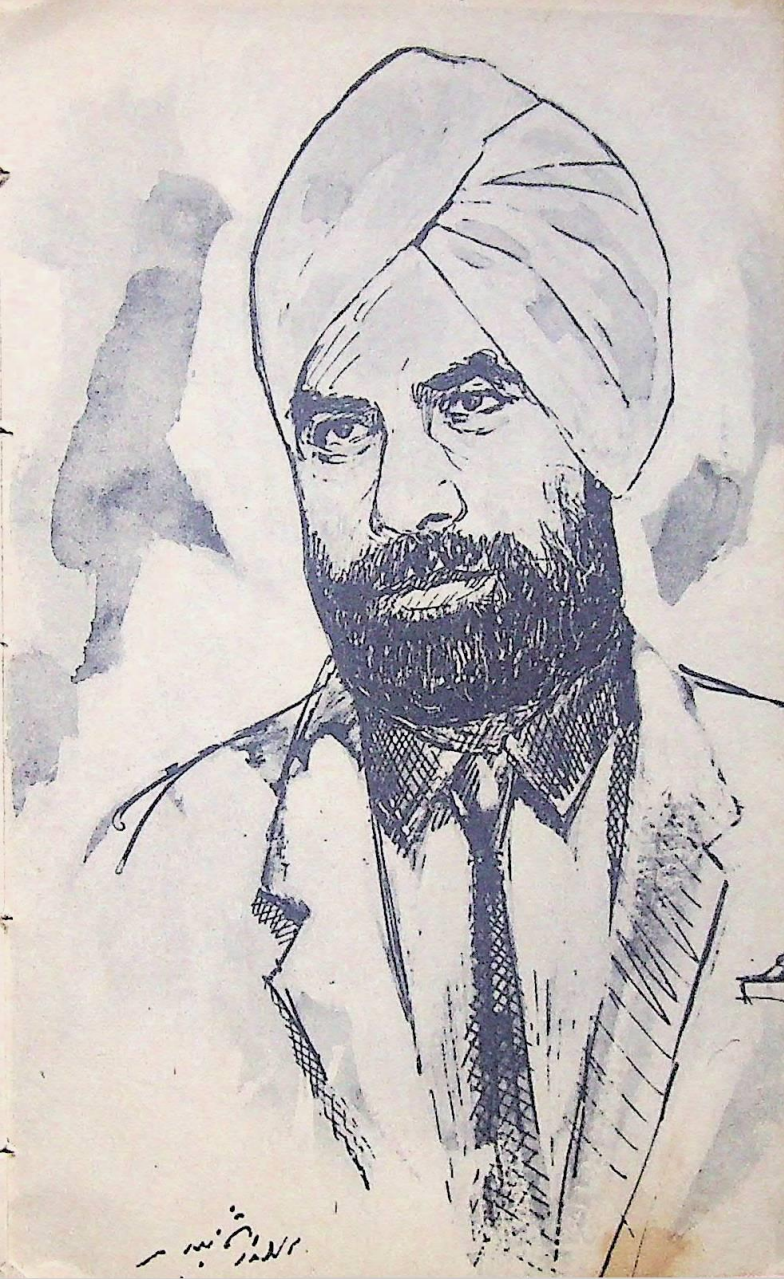
# इस्मत चुग़ताई

" भई, मेरी जीवनी बिलकुल इस योग्य नहीं है कि उसे गर्व से बताया जा सके। बचपन घर में पिटते-पिटते गुज़रा। शिक्षा बड़े बेढंगेपन से हुई। अलीगढ़ और लखनऊ में पढ़ी हूं।

" सबसे पहला लेख 'बचपन' लिखा था—फिर 'फसादी' कहानी लिखी और साहस करके 'साकी' को भेज दी, परन्तु साथ ही यह भी लिख दिया कि खुदा के लिए कहानी पर मेरा नाम मत छापिएगा। वास्तव में मुझे बदनामी का डर था कि लोग क्या कहेंगे। यह १६३८ का ज़िक्र है। उस समय से बराबर लिख रही हूं। आजकल फिल्म लाइन में हूं और करीब-करीब लिखना छूट गया है।"

अब तक आपकी कहानियों के कई संग्रह तथा उपन्यास उर्दू तथा हिन्दी में प्रकाशित हो चुके हैं।

# मुल्कराज आनन्द

मुल्कराज आनन्द की गणना भारत के प्रसिद्ध उपन्यासकारों तथा कला-समीक्षकों में है। आप अंग्रेज़ी में लिखते हैं परन्तु आपकी रचनाओं का अनुवाद अनेक भारतीय तथा विश्व की भाषाओं में हुआ है।

आपका जन्म १९०५ में पेशावर में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से बी० ए० पास करने के बाद आप दर्शन का अध्ययन करने लंदन चले गए। इसी समय आपने उपन्यास लिखना आरंभ किया जो आपके गहरे आत्ममंथन के परिणाम हैं। शोध समाप्त करने के बाद आपने कुछ समय लंदन में शिक्षण, बी० बी० सी० पर प्रसारण का कार्य किया।

आपके लिखे अब तक ३० से ऊपर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं : 'अनटचेबिल', 'कुली', 'टू लीव्ज़ एंड ए बड', 'सेविन समर्स', 'दि हार्ट ऑव इंडिया' आदि। आपकी कृतियों में सामाजिक क्रांति का स्वर प्रबलता से लक्षित होता है।

आप 'मार्ग' नामक सुप्रसिद्ध कला त्रैमासिक का संपादन करते हैं। कुछ समय आप पंजाब विश्वविद्यालय में टैगोर प्रोफ़ेसर रहे। अब ललित कला अकादमी के अध्यक्ष हैं।
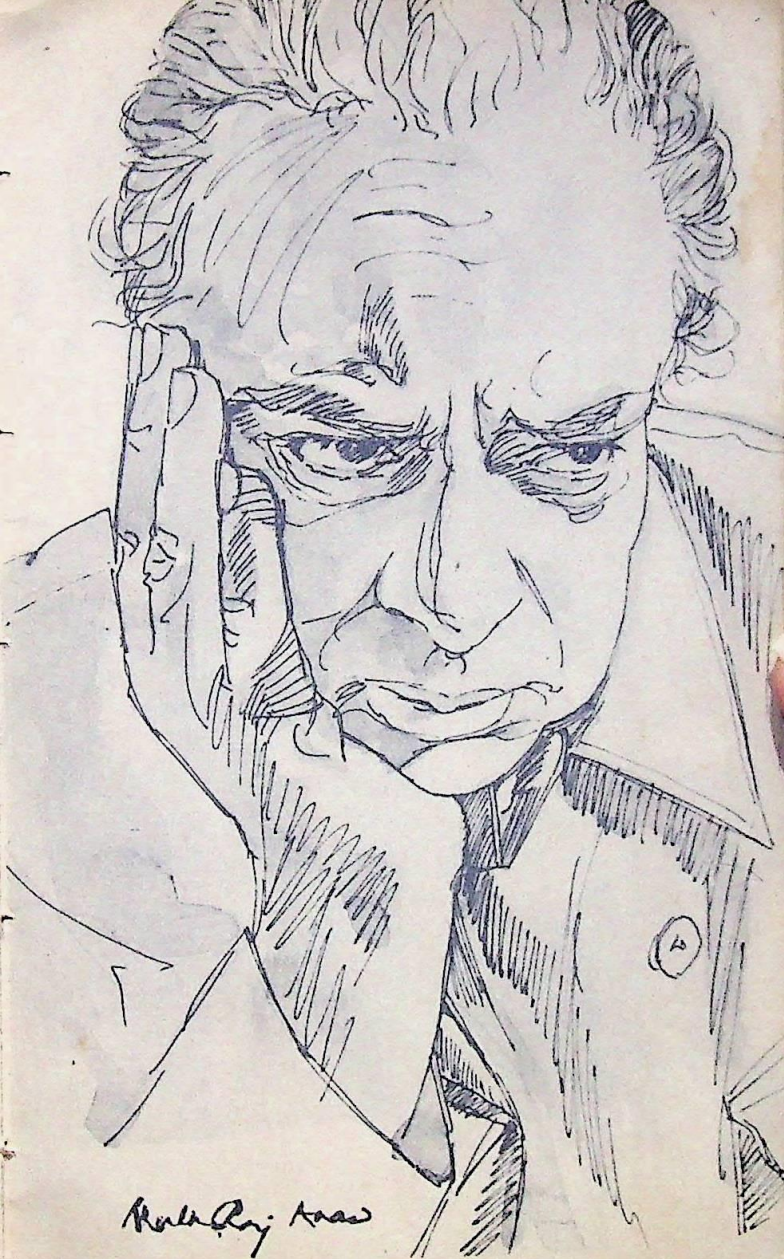
# नानक सिंह

नानक सिंह पंजाबी के सर्वप्रमुख कहानी और उपन्यासकारों में गिने जाते हैं। अपनी हृदयहारी रचनाओं से आपने पंजाबी साहित्य को समृद्ध किया है।

आपका जन्म १८९७ में पेशावर में हुआ था। बहुत छोटी अवस्था से ही आपने कहानियां लिखना आरंभ कर दिया था। 'जीवन की कटुताओं और कष्टों के निरंतर बवंडरों' से प्राप्त अनुभवों को आपने बड़ी मार्मिकता से अपनी कृतियों में उतारा है।

अब तक आपके ५० से ऊपर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से कई का हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। आपकी प्रमुख कृतियां ये हैं: 'मेरी दुनिया' (आत्मचरित्र), 'सुमनकान्ता', 'आदमखोर', 'संगम', 'नासूर' आदि। 'एक म्यान में दो तलवारें' पर आपको १९६० में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आप 'लोक साहित्य' मासिक का संपादन करते हैं और अमृतसर में रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਿੰਘ

# अमृता प्रीतम

'पंजाब-कोकिला' नाम से प्रसिद्ध अमृता प्रीतम आधुनिक युग में भारत की लेखिकाओं में सर्वोपरि हैं। आपको साहित्य अकादमी तथा पंजाब सरकार की ओर से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

अमृता प्रीतम ने कविताओं के अतिरिक्त कहानियां और उपन्यास भी लिखे हैं। उनकी सभी रचनाएं रोमांटिक भावनाओं से भरपूर हैं। प्रेम की पीर का चित्रण करने में आपको अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

आपका जन्म १९१९ में गुजरानवाला में हुआ। पिता की साहित्यिक रुचियों से प्रेरणा पाकर आपने ११ वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखना आरंभ कर दिया। आपकी रचनाएं बहुत शीघ्र लोकप्रिय हो गईं। अब तक आपकी ३ दर्जन के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें प्रमुख हैं: 'आलना', 'पिंजर', 'डा० देव', 'सुनेहड़े', 'नागमणि' इत्यादि। आपकी कृतियों का भारत की अनेक भाषाओं तथा अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है।

आप 'नागमणि' नामक एक पंजाबी मासिक भी संपादित और प्रकाशित करती हैं और दिल्ली में रहती हैं।

अमृता प्रीतम

# चित्रों का क्रम